1

यजुर्वेद → 'अनियताक्षरावसानो यजुः', 'गद्यात्मको यजुः' तथा 'शेषे यजुः' का तात्पर्य यही है कि ऋक् तथा साम से भिन्न गद्यात्मक मन्त्रों का अभिधान 'यजुः' है। विषय वस्तु की दृष्टि से याज्ञिक क्रिया-कलाप के ज्ञान के लिए उपयोगी वेद यजुर्वेद है। यजुर्वेद के मन्त्रों से अध्वर्यु के द्वारा यज्ञ किया जाता था। निरुक्तकार यास्क यजुः शब्द यज् धातु से निष्पन्न मानते हैं (7/20)। इसका भाव यह है कि यजुर्वेद से यज्ञ का स्वरूप निर्धारण होता है - 'यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उत्वः'। अतः याज्ञिक दृष्टि से यजुर्वेद का अपरनाम अध्वर्युवेद भी है।

सम्प्रदाय के आधार पर यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है। सामान्यतः आदित्य परम्परा से प्राप्त मंत्र समुदाय को शुक्ल यजुर्वेद और ब्रह्म परम्परा के द्वारा प्राप्त मन्त्रों को कृष्णयजुर्वेद कहते हैं। शुक्लत्व और कृष्णत्व का भेद के सम्बन्ध में पौराणिक आख्यायिका उल्लेख 'कल्याण' के 'वेद-कथाङ्क' में प्राप्त होता है जिसका यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

सर्वप्रथम सत्यवती के पुत्र पाराशर वेदव्यास ने एक ही वेदसंहिता का चार भागों में विभाजन करके ऋक्, यजुः, साम और अथर्व नाम के चारों वेदों को क्रमशः पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु नाम के चार शिष्यों को पढ़ाया। उसके बाद वैशम्पायन ने

Scanned with CamScanner

याज्ञवल्क्यादि अपने शिष्यों को यजुर्वेद श्रवण कराया। किसी समय महर्षि वैशम्पायन ने याज्ञवल्क्य से क्रुद्ध होकर अपने द्वारा पढ़ायी गई वेदविद्या को त्यागने का आदेश दिया। गुरु के आज्ञानुसार याज्ञवल्क्य ने अपने योगबल के द्वारा विद्या को मूर्तरूप करके वमन किया। उक्त वमन किए हुए यजुषों को वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तित्तिरि रूप धारण करके भक्षण कर लिया। तबसे वे यजुर्मन्त्र 'कृष्णयजुर्वेद' के नाम से प्रसिद्ध हुए। दूसरी ओर दुःखित याज्ञवल्क्य ने कठोर तपस्या करके आदित्य को प्रसन्न किया। तप से प्रसन्न होकर सूर्य ने वाजि (अश्व) रूप धारण करके दिन के मध्याह्न में यजुषों का उन्हें उपदेश दिया। इस प्रकार आदित्य से प्राप्त यजुष शुक्ल कहलाये दिन के मध्याह्न में प्राप्त होने के कारण 'माध्यन्दिन' तथा वाजिरूप आदित्य से उपदिष्ट होने से वाजसनेय कहलाये। आचार्य सायण भी इस मत को स्वीकार करते हैं।

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने यजुर्वेद के 101 शाखाओं को स्वीकार किया है। इसमें शुक्ल यजुर्वेद की 15 तथा कृष्णयजुर्वेद की 86 शाखायें हैं। शुक्ल यजुर्वेद की 15 शाखायें हैं- काण्व, माध्यन्दिन, शापेय, तापायनीय, कापाल, पौण्ड्रवत्स, आवटिक, परमावटिक, पाराशर्य, वैधेय, वैनेय, औधेय, गालव, वैजव तथा कात्यायनीय। इन पन्द्रह शाखाओं में मात्र दो ही शाखायें सम्प्रति उपलब्ध हैं- (i) काण्व और (ii) माध्यन्दिन। कृष्णयजुर्वेद की 86 शाखाओं में मात्र 4 शाखायें उपलब्ध हैं- (i) तैत्तिरीय (ii) मैत्रायणीय (iii) कठ और कपिष्ठल।

Scanned with CamScanner

माध्यन्दिन शाखा → याज्ञवल्क्य के शिष्यों में माध्यन्दिन नाम के प्रसिद्ध शिष्य हुए। उन्होंने जिन यजुषों का प्रवचन किया, वह माध्यन्दिन शाखा के नाम से प्रसिद्ध है। इस शाखा के नामकरण के विषय में दूसरा हेतु यह भी दिया जाता है कि वाजिरूप सूर्य के द्वारा याज्ञवल्क्य ने दिन के मध्यकाल में यजुष् मन्त्रों की प्राप्त किया था, इसलिये यह शाखा माध्यन्दिन कहलायी।

इस संहिता का विभाग अध्यायों तथा कण्डिकाओं में है। इसमें 40 अध्याय हैं। इन अध्यायों में कुल मिलाकर 303 अनुवाक तथा 1,975 कण्डिकाएँ हैं। इस संहिता के चालीस अध्यायों में 39 अध्यायों का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय श्रौत कर्मकाण्ड ही है। 40वें अध्याय में ईशावास्योपनिषद् उपदिष्ट है। यह उपनिषद् सभी उपनिषदों में प्रथम परिगणित है।

काण्व शाखा → यह शुक्ल यजुर्वेद की दूसरी उपलब्ध शाखा है। इसके प्रवचनकर्ता आचार्य कण्व हैं। माध्यन्दिन संहिता की तरह काण्व संहिता में भी 40 अध्याय हैं, जो चार दशकों में विभक्त हैं। प्रत्येक अध्याय में कई अनुवाक और प्रत्येक अनुवाक में कई मन्त्र हैं। कुल अनुवाकों की संख्या 328 तथा मन्त्रों की संख्या 2086 है।

तैत्तिरीय संहिता → कृष्णयजुर्वेदीय इस संहिता का प्रसार दक्षिण भारत में है। इस शाखा ने अपनी संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, श्रौतसूत्र तथा गृह्यसूत्र - ~~ ~~ इन सभी को अक्षुण्ण बनाये रखा है। तैत्तिरीय संहिता में सारस्वत तथा आर्षेय के रूप में दो पाठभेद हैं। आज इस ~~संहिता~~ शाखा की जो संहिता

Scanned with CamScanner

उपलब्ध है, वह सारस्वत परम्परा की मानी जाती है। इस परम्परा में उपलब्ध तैत्तिरीय संहिता में कुल 7 काण्ड, 44 प्रपाठक तथा 651 अनुवाक हैं। आचार्य सायण की यही अपनी शाखा थी।

मैत्रायणीय शाखा → कृष्ण यजुर्वेद की शाखाओं में इस शाखा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'मित्रयु' नामक आचार्य के प्रवचन करने के कारण इसका नाम मैत्रायणी हो गया होगा। वैयाकरण पाणिनि ने अपने गणपाठ में मैत्रायण का उल्लेख किया है। हरिवंशपुराण में इस प्रकार का उल्लेख मिलता है →

"मैत्रायणी ततः शाखा मैत्रेयास्तु ततः स्मृताः॥"

यह संहिता गद्य-पद्यात्मक है। अन्य कृष्णयजुर्वेदीय संहिताओं के समान इसमें भी मन्त्र तथा ब्राह्मणों का सम्मिश्रण है। इस संहिता में चार काण्ड हैं। प्रत्येक काण्ड को अलग-अलग नामों से अभिहित किया गया है। ये हैं → आदिम, मध्यम, उपरि तथा खिल। प्रथम में 11 प्रपाठक, मध्यम में 13 प्रपाठक, उपरि में 16 तथा खिलकाण्ड में 14 प्रपाठक हैं। समग्र संहिता में 2144 मंत्र हैं।

कठ शाखा → इसे काठक संहिता भी कहा जाता है। इसका प्रवचन कठ नामक आचार्य ने किया था। कृष्णयजुर्वेद की शाखाओं में इस शाखा का अत्यधिक प्रचार था जो महर्षि पतञ्जलि की इस उक्ति से स्पष्ट है →

'ग्रामे ग्रामे काठकं कालापकं च प्रोच्यते'

इस संहिता का स्वरूप मन्त्रब्राह्मणोभयात्मक है। यह संहिता इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, याज्यानुवाक्या तथा अश्वमेधाद्यनुवचन - इन पाँच

Scanned with CamScanner

खण्डों में विभक्त है। इन खण्डों के टुकड़ों का नाम स्थानक है। कुल ~~स्थानों की संख्या~~ स्थानकों की संख्या 40, अनुवाचनों की संख्या 13, अनुवाकों की संख्या 843, मंत्रों की संख्या 3,091 तथा मन्त्रब्राह्मणों की सम्मिलित संख्या 18 हजार है।

<u>कपिष्ठल शाखा</u> → कपिष्ठल ऋषि के द्वारा प्रोक्त यजुषों का नाम कपिष्ठल है। इसका उल्लेख महावैयाकरण पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में किया है- कपिष्ठलो गोत्रे (8|3|91)। निरुक्त के टीकाकार दुर्गाचार्य ने अपने को कपिष्ठल वासिष्ठ बताया है - 'अहं च कपिष्ठलो वाशिष्ठः'। कपिष्ठल संहिता आज पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है। आचार्य कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार यह 6 अष्टकों तथा 48 अध्यायों में विभक्त है। ~~इसमें~~ प्राप्त संहिता के 9 से 24, 32 तथा 43 अध्याय सर्वथा खंडित हैं। इसपर ऋग्वेद का प्रभाव परिलक्षित होता है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner